विद्यापति-नन्दक नंदन – अहिन्दी रचना,बी०ए०पार्ट -१ ,डॉ०मनोज कुमार सिंह,सह-आचार्य, हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

नन्दनक नन्दन कदम्बक तरु तर, धिरे-धिरे मुरलि बजाब।

समय संकेत निकेतन बइसल, बेरि-बेरि बोलि पठाव।।

साभरि, तोहरा लागि अनुखन विकल मुरारि।

जमुनाक तिर उपवन उदवेगल, फिरि फिरि ततहि निहारि।।

गोरस बेचत अबइत जाइत, जनि-जनि पुछ बनमारि।

तोंहे मतिमान, सुमति मधुसूदन, वचन सुनह किछु मोरा।

भनइ विद्यापति सुन बरजौवति, बन्दह नन्द किसोरा।।

प्रस्तुत पद आदिकाल के लोकप्रिय कवि मैथिल-कोकिल विद्यापति द्वारा रचित है।इस पद में कवि कृष्ण-राधा के प्रेम की ही चर्चा की है । सामान्यतः राधा के विरह पर तो अनेक कविताएं लिखी गई हैं , लेकिन कृष्ण के विरह को बहुत कम कविताएं मिलती हैं । यह गीत कृष्ण के विरह से संबंधित है।

भावार्थ:-इस पद में राधा की सखी उससे कृष्ण की विरह-विदग्धता के बारे में बताते हुए कहती है कि नंद के नंदन अर्थात कृष्ण कदंब के पेड़ के नीचे खड़े होकर लगातार बाँसुरी बजा रहे हैं । कृष्ण उसी स्थल पर खड़े होकर बाँसुरी बजा रहे हैं ,जहां वे हमेशा राधा से मिला करते थे ।राधा की सखी राधा से कहती है कि यह सब तुम्हारे लिए ही तो कर रहे हैं । हे सांवरी ! तुम्हारे लिए प्रत्येक क्षण तुम्हारे लिये चिंतित रहते हैं । मैंने देखा है कि यमुना के किनारे उपवन में कृष्ण इधर उधर देख कर तुम्हे ही ढूंढ रहे हैं।यही नहीं आस-पास से गुजरने वाले सभी पथिकों और दूध बेचने वाले से तुम्हारे बारे में पूछ रहे हैं कि राधा कहीं दिखी है क्या ? अंत में सखी राधा से कहती है कि तुम भी बुद्धिमान हो और कृष्ण भी सुबुद्धि सम्पन्न हैं।मेरी बात पर विश्वास करो ।